सनाय

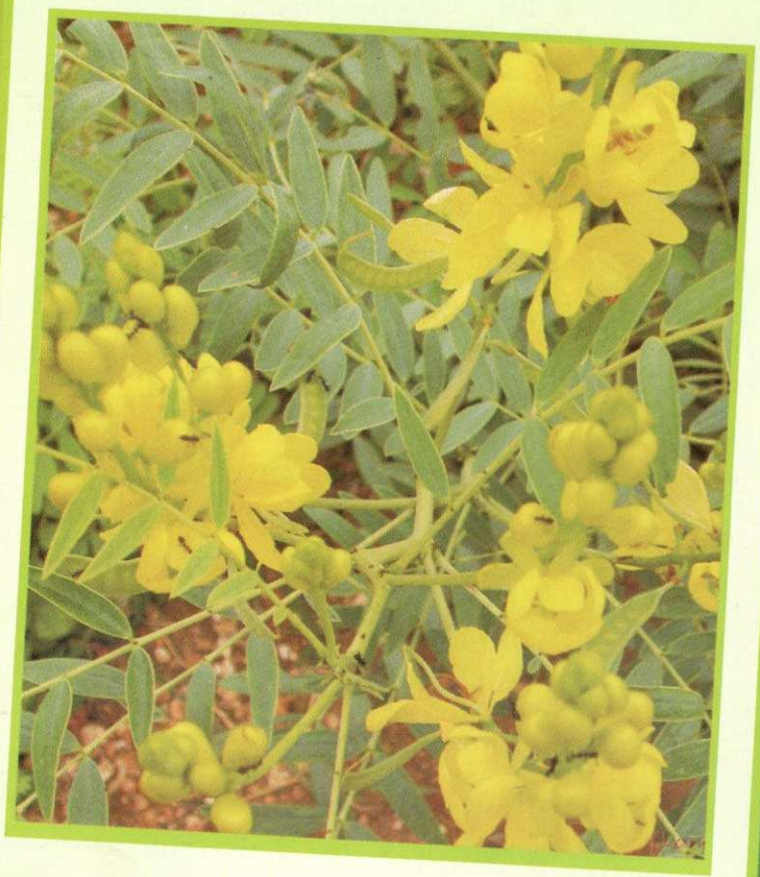

RSMPB
JAIPUR

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर
फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975
Mail ID-rsmpboard@gmail.com
Website : www.rsmpb.com

सनाय

वानस्पतिक नाम - Cassia angustifolia

सनाय का मूल उद्‌गम स्थान दक्षिण अरब है। भारत में इसकी खेतीं तमिलनाडू में की जाती है। राजस्थान में जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, चुरू, पाली, नागौर व सिरोही जिलों की शुष्क जलवायु इस फसल के लिये उपयुक्त है। यह एक वर्षीय शाकीय पौधा है जिसकी ऊंचाई 60–100 सेमी. के लगभग होती है। इसकी खेती मुख्यतया पत्तियों व फलियों के लिए की जाती है। इसमें एक एल्केलाइड सेनोसाइड होता है जिसकी मात्रा फलियों में 3–5 प्रतिशत एवं पत्तियों में 2.5–4 प्रतिशत होती है। लेकीन पत्तियों का उपयोग औषधीय चाय (Herbal tea), बेकरी में अधिक होनें के कारण पत्तियों की मांग ज्यादा है।

1. **भूमि एवं जलवायु** :– सनाय एक (दलहन) फसल है लेकिन वायुमण्डलीय नाइट्रोजन के स्थिरीकरण के लिये इनकी जडों में गाठें नहीं होती है। इसकी खेती के लिये रेतीली मिट्‌टी से दोमट मिट्‌टी उपयुक्त रहती है जो कि कम से कम मध्यम उपजाऊ हो एवं पी.एच. 7 से 8.5 हो। जिन भूमियों में पानी भरता हो वो इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं है। यह फसल खेत में 130 से 150 दिनों तक रहती है। इसकें पौधें

सर्दियो में पत्ते गिरा देते हैं।

2. **भूमि की तैयारी** :– खेत की पहली जुताई गहरी करके 2–3 जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से करके पाटा चला देना चाहियें।

3. **बोनें का समय** :– इस फसल का बोनें का उपयुक्त समय मानसून की बरसात के तुरंत बाद है। बोनें के समय भूमि में पर्याप्त नमी होनी चाहिये। इसलिए इसकी बुवाई अगस्त के द्वितीय पखवाडे में करनी चाहियें। इसका बीज प्रति हैक्टर 10 किलो पर्याप्त रहता है।

4. **बुवाई का तरीका** :– इस फसल को कतारो में बोना लाभदायक रहता है। इसे छिडकाव विधि द्वारा भी बोया जा सकता है। इसकी बुवाई साधारण सीड ड्रिल या देशी हल के पीछे पोरा बांधकर कर सकते है। कतारो की दूरी 30 सेमी. रखनी चाहिये तथा बीज 1.5 से 2 सेमी. की गहराई पर बोना चाहिये। इससे अधिक गहरा नहीं बोना चाहिये। बीजों का अंकुरण उससें 5 दिनों में शुरू हो जाता है तथा अगले सप्ताह तक अंकुरण पूर्ण हो जाता है।

5. **निराई–गुडाई** :– बुवाई के एक महिनें के पश्चात् खेत में निराई–गुडाई करनी चाहिये जिससे खरपतवार निकल जावें व पौधों की दूरी 30 सेमी. रखते हुये बाकी पौधों को उखाड देना चाहिये।

6. **खाद एवं उर्वरक** :– इस फसल के लिए 80 किलो नाइट्रोजन व 40 किलो फास्फोरस प्रति हैक्टर देना चाहिये। 40 किलो नाइट्रोजन व फास्फोरस की पूरी मात्राा बुवाई के समय देनी चाहिये। ये उर्वरक बीज से 4–5 सेमी. गहरी परत में डालने चाहियें जिससे वृद्वि करते हुये पौधों को आसानी से प्राप्त हो। इसके बाद 20 किलो नाइट्रोजन 40 दिनों के बाद व 20 किलो 80–85 दिनों के बाद पत्तियों की पहली तुडाई के बाद देनी चाहियें।

7. **सिंचाई** :– सनाय एक वर्षा पर आधारित फसल है एवं सूखे को सहन करने की क्षमता रखती है। इस फसल को सिंचाई की आवश्यकता नही होती है।

8. **कटाई** :– इसकी कम उम्र की पत्तियों में सेनोसाइड की मात्रा अधिक होती है। लेकिन उपज वनज के हिसाब से बेची जाती है। अतः उपज की मात्रा एवं पत्तियों में सेनोसाइड की मात्रा में सामजंस्य होना चाहिये। यह स्थिति बुवाई के 80 से 90 दिनों के बाद आती है। अतः इस फसल की पत्तियों की पहली तुड़ाई 80 से 90 दिनों में करनी चाहिये। तेज धार वाले हथियार से पूरे पौधे को जमीन से 3 इंच ऊपर से काटना चाहिये। काटते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि पौधा जड से नहीं उखडे। पहली कटाई के बाद हर 60 दिन बाद

बराबर काटते रहना चाहिये। पूरे वर्ष मे चार बार कटाई करनी चाहिये, सर्दियो में पाला लगने का डर रहता है अतः पहली कटाई पाला लगने के पहले ही कर लेनी चाहियें।

9. **पत्तियों को सुखाने की विधि** :– इस फसल का मुख्य उत्पाद इसकी पत्तियां होती है जो कि हरी होनी चाहियें। कटी हुई फसल को पतली परत के रूप में खेत में फैला देना चाहियें जिससे इसमें नमी की मात्रा कम हो जाये। इसके बाद इन पत्तियों को हवादार छाया वाले स्थान पर सुखानी चाहियें। इसे सूखने में 3–5 दिन लगते है। पत्तियों को सूखाने में देरी करने से गलत तरीके से सुखाने पर पत्तियों का रंग काला–भूरा हो जाता है एवं सेनोसाइड की मात्रा भी कम हो जाती है। जिससे उत्पाद की कीमत कम मिलती है। इन पत्तियों को बोरों में भरकर बेचा जाता है।

10. **कीट व बीमारी** :– इस फसल की शुरू की अवस्था में पौध आद्र गलन रोग से काफी नुकसान होता है। इसके बचाव के लिये थाइरान या कैप्टान 2 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से बीजोपचार करना चाहिये। बाद की

बराबर काटते रहना चाहिये। पूरे वर्ष मे चार बार कटाई करनी चाहिये, सर्दियो में पाला लगने का डर रहता है अतः पहली कटाई पाला लगने के पहले ही कर लेनी चाहियें।

9. **पत्तियों को सुखाने की विधि** :– इस फसल का मुख्य उत्पाद इसकी पत्तियां होती है जो कि हरी होनी चाहियें। कटी हुई फसल को पतली परत के रूप में खेत में फैला देना चाहियें जिससे इसमें नमी की मात्रा कम हो जाये। इसके बाद इन पत्तियों को हवादार छाया वाले स्थान पर सुखानी चाहियें। इसे सूखने में 3–5 दिन लगते है। पत्तियों को सूखाने में देरी करने से गलत तरीके से सुखाने पर पत्तियों का रंग काला–भूरा हो जाता है एवं सेनोसाइड की मात्रा भी कम हो जाती है। जिससे उत्पाद की कीमत कम मिलती है। इन पत्तियों को बोरों में भरकर बेचा जाता है।

10. **कीट व बीमारी** :– इस फसल की शुरू की अवस्था में पौध आद्र गलन रोग से काफी नुकसान होता है। इसके बचाव के लिये थाइरान या कैप्टान 2 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से बीजोपचार करना चाहिये। बाद की अवस्था में इस फसल में पत्तियों में धब्ब रोग

बराबर काटते रहना चाहिये। पूरे वर्ष मे चार बार कटाई करनी चाहिये, सर्दियो में पाला लगने का डर रहता है अतः पहली कटाई पाला लगने के पहले ही कर लेनी चाहियें।

9. **पत्तियों को सुखाने की विधि** :– इस फसल का मुख्य उत्पाद इसकी पत्तियां होती है जो कि हरी होनी चाहियें। कटी हुई फसल को पतली परत के रूप में खेत में फैला देना चाहियें जिससे इसमें नमी की मात्रा कम हो जाये। इसके बाद इन पत्तियों को हवादार छाया वाले स्थान पर सुखानी चाहियें। इसे सूखने में 3–5 दिन लगते है। पत्तियों को सूखाने में देरी करने से गलत तरीके से सुखाने पर पत्तियों का रंग काला–भूरा हो जाता है एवं सेनोसाइड की मात्रा भी कम हो जाती है। जिससे उत्पाद की कीमत कम मिलती है। इन पत्तियों को बोरों में भरकर बेचा जाता है।

10. **कीट व बीमारी** :– इस फसल की शुरू की अवस्था में पौध आद्र गलन रोग से काफी नुकसान होता है। इसके बचाव के लिये थाइरान या कैप्टान 2 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से बीजोपचार करना चाहिये। बाद की अवस्था में इस फसल में पत्तियों में धब्ब रोग एवं पत्ति झुलसन रोग होता है। इस रोग से बचाव के लिये 15 दिनों के अंतराल पर डाईलेन एम–45 का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी

के हिसाब से छिडकाव करना चाहिये।

11. **उपज** :– इसकी सूखी पत्तियों का उत्पादन चार कटाई करने पर प्रतिवर्ष प्रति हैक्टर 10 क्विंटल होता है। एक बार इस फसल की बुवाई करने पर पांच वर्ष तक उपज प्राप्त होती रहती है।

12. **बीज उत्पादन** :– बीज उत्पादन के लिये स्वस्थ पौधों को पहचान कर छोड देना चाहिये। उन्हें काटना नही चाहिये। जिससे उनमें फलियां लगे। पत्तियां पकने पर भूरी हो जायेगी। उस समय उन को तोडकर धूप में सुखा लेना चाहिये। सूखी हुई फलियों को डण्डों से कूटकर बीज अलग कर लेना चाहिये।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर

फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975

Mail ID-rsmpboard@gmail.com, Website : www.rsmpb.com

के हिसाब से छिडकाव करना चाहिये।

11. **उपज** :– इसकी सूखी पत्तियों का उत्पादन चार कटाई करने पर प्रतिवर्ष प्रति हैक्टर 10 क्विंटल होता है। एक बार इस फसल की बुवाई करने पर पांच वर्ष तक उपज प्राप्त होती रहती है।

12. **बीज उत्पादन** :– बीज उत्पादन के लिये स्वस्थ पौधों को पहचान कर छोड देना चाहिये। उन्हें काटना नही चाहिये। जिससे उनमें फलियां लगे। पत्तियां पकने पर भूरी हो जायेगी। उस समय उन को तोडकर धूप में सुखा लेना चाहिये। सूखी हुई फलियों को डण्डों से कूटकर बीज अलग कर लेना चाहिये।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर

फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975

Mail ID-rsmpboard@gmail.com, Website : www.rsmpb.com

कालमेघ

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर
फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975
Mail ID-rsmpboard@gmail.com
Website : www.rsmpb.com

कालमेघ

वानस्पतिक नाम - Andrographis paniculata

कालमेघ एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है। इसका तना, पत्ती, बीज एवं जड सभी उपयोग में आते है। यह खरपतवार के रूप में खरीफ में पड़ती जगहों पर खेतों की मेढों पर उगता है। यह सीधा बढनें वाला शाकीय पौधा है। इसकी लम्बाई 1–3 फुट तक होती है। यह अनेंक छोटी शाखाओं में विभाजित होकर चारों ओर फैल जाती है और आसपास की झाडियों पर चढ जाती है।

कालमेघ के पत्ते 6–8 सेमी., लंबे होते है। फूल, गुलाबी रंग के लगभग 1 सेमी. लंबे होते हैं तथा खुली, लंबी, फैली हुई शाखाओं पर लगते है।

1. **उपयोग** :– कालमेघ की जड को छोडकर समूचा पौधा औषधि में काम आता है। कालमेघ बलवर्धक एवं पौष्टिक होता है। यह ज्वर कृमि, पेचिश, दुर्बलता एवं पेट के आफरे में उपयोगी है। बच्चो के जिगर तथा अपच के रोग में यह लाभपद्र है। परीक्षणों से देखा गया है कि कालमेघ में एंटीबायोटिक तथा टाइफाइड ज्वर के तथा कुछ अन्य जावाणुओ को रोकने वाले तत्व है। मुख्य रूप से इसके चूर्ण, स्वरस व क्वांथ का प्रयोग करते हैं, हौम्योपैथिक में कालमेघड्रोप प्रयुक्त की जाती है।

2. **जलवायु** :– कालमेघ समशीतोष्ण जलवायवीय व खरीफ की फसल है। औसत वर्षा 75–90 सेमी. होनी चाहिए। परन्तु यह 125–160 सेमी. वर्षा वाले स्थानों पर भी यह होती है।

3. **भूमि** :– यह सभी प्रकार की भूमि में अनुकूलन की क्षमता रखता है। यह फसल अच्छे जल निकासवाली किसी भी प्रकार की भूमि में हो सकती है, लेकिन अधिक पैदावार के लिए बलुई दोमट भूमि अधिक उपयुक्त है।

4. **भूमि की तैयारी** :– मई–जून में खेत को जोतना चाहिये। जुताई करने से पहले 15–20 टन गोबर की खाद खेत में डाल दे।पाटा चलाकर मिट्टी को भुरभुरा बना लेना चाहिए।

5. **बीज की मात्रा** :– इसकी खेतीं के लिए 5–6 किग्रा. एक हैक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है।

पौधों की वानस्पतिक वृद्वि अधिक होती है।

11. **राग व कीट** :– सामान्यतः इसमें रोग का प्रभाव नही होता है। कीटों के नियंत्रण हेतु मेलथियान दवा 2 मि.ली. एक लीटर पानी में घोल बना कर प्रति हैक्टेयर छिडकाव करें।

12. **फसल की कटाई** :– इसकी फसल 4–5 माह में पक जाती है जब अधिकांश बीज पूर्ण रूप से पक जाये तब काटना चाहिये। पौंधो को काटकर छाया में सुखाना चाहिये। 8 दिन के अंतराल पर पलटाई करे। पलटते समय ध्यान रखे की पत्तियां कम से कम झडें पूर्ण रूप से सूखे पौधों को जूट की बोरियों में जिसमें प्र्याप्त वायु संचार हो में भरकर सग्रहण करे।

13. **उपज व आय व्यय** :– कालमेघ का पूर्ण रूप से सूखा हुआ पौधा ही विक्रय होता है। कालमेघ की फसल से प्रति है0 4–5 क्विंटल बीज तथा 30–35 क्विंटल शुष्क शाक मिलती है। इसकी खेतीं पर 10000 रू. प्रति है0 का खर्च होता है। इसका बाजार भाव 100 रू. प्रति किलोग्राम बीज, पत्तियां 30–60 रू. प्रति किग्रा. है इसकी खेती 25–30 हजार रू. तक शुद्व लाभ अर्जित कर सकते है।

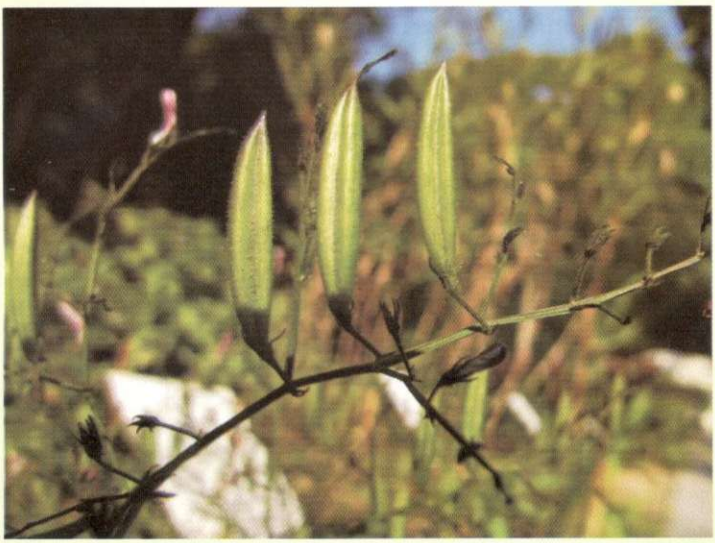

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर
फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975
Mail ID-rsmpboard@gmail.com, Website : www.rsmpb.com